

विद्या ददाति विनयम्

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

विद्या विनय को देती है। विद्या को ज्ञान कहा गया है और अविद्या को अज्ञान मनुष्य और पशु में भेद रेखा ज्ञान ही है। यदि मनुष्य में ज्ञान न रहे तो वह सींग और पूंछ से हीन पशु के समान है। विनम्रता विद्या से आती है, शिक्षा से आती है। विनम्रता से योग्यता प्राप्त होती है। योग्यता से धन प्राप्त होता है और धन से सुख की प्राप्ति होती है। विद्या मूल है और सुख उसका फल। इसीलिए कहा गया है—

विद्या ददाति विनयम्, विनयात् याति पात्रताम्।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मः ततो सुखम्।।

अच्छा इंसान बनने के लिए विद्या और विनम्रता का योग आवश्यक है। पशु और मनुष्य में अंतर यही है कि मनुष्य ज्ञान सम्पन्न होता है और पशु ज्ञानहीन होता है। धनवान तो कोई भी बन सकता है। किन्तु विद्यावान सभी नहीं बन सकते। विद्या या ज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरुकुल वास या गुरु का सान्निध्य आवश्यक होता है। बिना गुरु के ज्ञान संभव नहीं। गुरु ही शीष्य को अनुशासन, विनम्रता, प्रेम, सहिष्णुता का पाठ पढ़ाकर पूर्ण मानव बनाते हैं। मानव समूह में रहता है। पशु भी समूह में रहते हैं। पशुओं के समूहों को समज कहा जाता है। इस संसार में अज्ञान ही सबसे बड़ा दुःख है और ज्ञान सबसे बड़ा सुख। देव गुरु और ईश्वर की कृपा से ज्ञान प्राप्त होता है। अज्ञान को अंधकार कहा जाता है। अंधकार दो प्रकार का है। एक तो रात्रि का अंधकार जो कि सूर्य के प्रकाश से दूर हो जाता है। दूसरा मनुष्य के अन्तःकरण में स्थित अंधकार जिसे अज्ञान भी कहा जाता है। यह बहुत ही सघन होता है। इसे दूर करने के लिए ज्ञान रूपी दीपक की आवश्यकता होती है। इस अज्ञान को दूर करने के लिए शास्त्रवचन आवश्यक है। शास्त्रों के अध्ययन और उसके आचरण के द्वारा यह अज्ञान दूर होता है। इस अज्ञान के दूर होने से अन्तःकरण निर्मल हो जाता है। सरस्वती जो कि विद्या

की अधिष्ठात्री देवी है, उनकी कृपा से ज्ञान प्राप्त होता है। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थाओं में सर्वप्रथम सरस्वती माता की पूजा होती है। देवपूजन से मानव की बुद्धि निर्मल बनती है।

मनुष्य सुख-दुःख के द्वन्द्व से परे जीवन व्यतीत करता है। अनुकूलता और प्रतिकूलता की स्थिति में मानव सम रहता है। अज्ञान या विद्या दुःख का कारण है और ज्ञान सुख का। सुख भी दो प्रकार के है— एक भौतिक सुख और दूसरा आध्यात्मिक। भौतिक सुख नश्वर है और आध्यात्मिक सुख साश्वत। विद्या या ज्ञान ही आध्यात्मिक सुख को प्रदान करता है। विनम्रता से शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है और अशिष्टता मित्र को भी शत्रु बना देती है। इसलिए मनुष्य को विनम्रता धारण करनी चाहिए। वृक्ष जब फल से युक्त होता है तो नम्र होकर के झुक जाता है। वैसे ही विनम्र व्यक्ति अहंकारहीन होता है वह सदैव झुक कर चलता है। उसमें सहिष्णुता, समता आदि गुण स्वयं आ जाते हैं।

संसार में विद्या ही ऐसी वस्तु है जिसकी सर्वत्र पूजा होती है। विद्वान या विनम्र व्यक्ति जहां भी जाता है वहीं पर प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। विद्वान पुरुष ही जीवन में सम्यक् रूप से योग्यता और अयोग्यता में, कर्तव्य और अकर्तव्य में भेद करने में समर्थ होता है। आज के प्रजातांत्रिक युग में विद्या या ज्ञान बहुत आवश्यक है। विद्या से आदमी महान् बनता है धन से नहीं। बहुत बड़े-बड़े साम्राज्य और धन दौलत वाले पुरुष नष्ट हो गये काई उनका नाम भी लेने वाला आज नहीं है, किन्तु वाल्मीकि, कालीदास, भवभूति और बाण, तुलसीदास जैसे अकिंचन किन्तु विद्या एवं विनय सम्पन्न महापुरुषों का नाम आज जन-जन का कंठहार बना हुआ है। विद्या के इसी महात्म के कारण ही कहा गया है कि सभी धनों को भाई, पुत्र इत्यादि बांट सकते हैं। किन्तु विद्या एक ऐसा प्रच्छन्न धन है जिसका कोई बंटवारा नहीं कर सकता। चोर इसे चुरा नहीं सकता। राजा इसे छीन नहीं सकता। इसीलिए विद्या को सभी धनों में प्रधान माना गया है। भौतिक स्वर्ण आदि सभी धन क्षण भंगुर और विद्युत् के समान चंचल है लेकिन विद्या एक ऐसा धन है जो जीवनपर्यन्त साथ में रहती है और कभी भी मानव का साथ नहीं छोड़ती।

विनम्रता का तात्पर्य है हम बड़ों के साथ केसा व्यवहार करें, छोटों के साथ केसा व्यवहार करें जिससे सभी व्यक्ति हमारा अनुकरण करें। प्रोफेसर तातेड़ कहते हैं कि एक माता अपने दो पुत्रों का परीक्षण करने के लिए बड़े पुत्र को बुलाती है और कहती है कि बेटा बाजार से कुछ समान ले आओ। बड़ा बेटा तत्काल ही माता के इंगित को समझकर कार्य कर देता है। किन्तु छोटे बेटे को उसी कार्य के लिए कहती है तो छोटे बेटे ने कहा माता अभी बहुत धूप है, धूप कम होने के बाद मैं जाऊंगा और आपका कार्य कर दूंगा। माता ने तत्काल निर्णय लिया कि हमारा बड़ा बेटा मेरे आदेश को शिरोधार्य कर तत्काल कार्य कर दिया। अतः यह अधिक विनम्र है। इससे यह सिद्ध होता है कि जिस व्यक्ति में ज्ञान होता है विनम्रता स्वयं उसमें आ जाती है। अज्ञान और अहंकार दोनों ज्ञान के विरोधी हैं। क्रोध, मान, माया और लोभ दुर्गुणी व्यक्ति में अपनी आप आ जाते हैं। अहंकार अज्ञान का प्रतीक है। सूखा वृक्ष टूट जाता है किन्तु वह झुकता नहीं। अहंकारी व्यक्ति भी अपने को ही विद्वान मानकर अपने नकारात्मक वृत्ति का परिचय देता है।